their better and reliable performance. This is undoubtedly a national failure of Information and Broadcasting Ministry of Government of India. On the other hand this forcible tuning in to foreign radios will definitely create a great perplexity among the law abiding citizens of India.

You can very easily tune to All India Radio Stations like Cuttack, Patna, etc., from Delhi. But noise-free reception of Calcutta Station from Delhi for a few minutes even in the night is practically a big problem. It cannot be a natural failure when science is advancing so rapidly. Moreover, the geographical and political location of Calcutta demands a very powerful mass media system to enlighten its people for better guidance. Thus, I strongly protest against the poor performance of Calcutta Station and request the hon'ble Minister incharge to instal at Calcutta high power equipments with the latest technology so that the radio link can be established with remote corners of West Bengal and its people can be saved from listening to unwanted foreign Radio Stations and thus a great confusion among them can be eliminated.

(v) REPORTED INCREASE IN ACCIDENTS BECAUSE OF NEGLIGENCE OF DRIVERS OF BUSES IN DELHI.

डा० रामजी सिंह (भागलपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अधीन अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय को आप की अनुमति से उठाना चाहता हूं :

यह सामान्य अनुभव की चीज है कि दिल्ली में आये दिन अनियंत्रित बस चालन के कारण भयंकर दुर्घटनाओं में वृद्धि हो रही है। रात में ही लोक सभा के दो सदस्य श्री मोहन भैया और श्री परमानन्द गोविन्दजी वाला (खंडवा) को विजय चौक के पास बस ने दबा दिया जो अभी बड़ी ही खतरनाक स्थिति में वैलिंगडन अस्पताल में हैं। एक तो बसों में अत्यधिक भीड़ रहती है, और अक्षम, वृद्ध, बीमार एवं बच्चे बिना खतरा मोल लिये चढ़ नहीं पाते, कितने ही चढ़ने के समय गिर कर घायल हो जाते हैं। लेकिन उससे भी अधिक दुर्घटना तब होती है जब बस चालक यात्रियों के उतरने उतरते ही बस चला देते हैं एवं यात्री गिर पड़ते हैं। इसके अलावा बस इस कदर से चलाये जाते हैं कि आगे बगल आदि कुछ नहीं देखा जाता है। यदि आंकड़ा लिया जाए कि कितनी जगहें टक्कर लगती हैं, कितने लोग घायल होते हैं तो स्थिति प्रकट हो जाएगी। इसके लिए मेरे कुछ सुझाव होंगे :

(1) दफ्तर के समय में बसों की संख्या अभी से चौथाई और बढ़ाई जाए।

(2) जब तक यात्री उतर न जायें कोई बस ड्राइवर बस आगे न बढ़ाए।

(3) इसकी जांच के लिए सरकार के ट्रेफिक अफसर रहें जो बसों के ठहराव में उसकी जांच कर तत्काल चालान करें एवं स्पीडो-मीटर लगा कर स्पीड चैक की जाये।

(4) बस चालकों को दुर्घटना से बचने के उपाय बताये जाय एवं हर छः माह पर एक सुरक्षा सप्ताह मनाया जाये।

(5) निर्दोष राहगीरों को राह की दुर्घटनाओं के लिये सरकार क्षति-पूर्ति करे एवं उसका खर्च उस वाहन के मालिक से वसूले।